

जहरीले पौधे, उनका प्रभाव और उपचार

डॉ. अर्पिता श्रीवास्तव, डॉ. नीरज श्रीवास्तव, डॉ. राकेश डांगी, डॉ. सचिन कुमार जैन एवं
डॉ. विधि गौतम

पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, रीवा

भारत में कई ऐसे पौधे पाए जाते हैं जो पशुधन और पालतू जानवरों के लिए घातक साबित हो सकते हैं। चराई की कमी, अनजाने में दूषित चारा खाने या जिज्ञासावश पौधे चबाने के कारण जानवर इन पौधों का शिकार हो जाते हैं।

जानवरों में जहरीले पौधों का असर और उनका उपचार मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि जानवर ने कौन सा पौधा और कितनी मात्रा में खाया है।

जानवरों पर जहरीले पौधों का असर

- मुंह से लार टपकना, उल्टी होना और गंभीर दस्त लगना।
- धड़कन का बहुत तेज या धीमा होना और अचानक कमजोरी आना।
- शरीर में कंपन, चलने में लड़खड़ाहट, दौरे पड़ना या बेहोशी।
- कुछ गंभीर मामलों में लीवर या किडनी पूरी तरह खराब हो सकते हैं।

जहर का तुरंत उपचार

यदि आपको शक है कि आपके जानवर ने कोई जहरीला पौधा खा लिया है, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। डॉक्टर आमतौर पर ये कदम उठाते हैं:

- अगर पौधा हाल ही में खाया गया है, तो डॉक्टर उल्टी कराने की दवा देते हैं या पेट में एक्टिवेटेड चारकोल डालते हैं ताकि जहर शरीर में न फैले।
- नस के जरिए ग्लूकोज या ड्रिप दी जाती है, जिससे शरीर हाइड्रेट रहे और जहर यूरिन के रास्ते बाहर निकल सके।
- उल्टी रोकने, दौरे शांत करने या पेट की परत को बचाने के लिए जरूरी दवाएं दी जाती हैं।

भारत के प्रमुख जहरीले पौधों, जानवरों पर उनके विस्तृत प्रभाव और उपचार

१. कनेर

कनेर पूरे भारत में सड़कों के किनारे और बगीचों में पाया जाने वाला एक आम सदाबहार झाड़ीदार पौधा है। इसके फूल गुलाबी, सफेद या पीले होते हैं। यह अत्यधिक जहरीला होता है।

पौधे का हर हिस्सा (पत्तियां, फूल, तना, जड़) और यहाँ तक कि इसकी सूखी पत्तियां भी उतनी ही जहरीली होती हैं।

जानवरों पर प्रभाव

- इससे दिल की धड़कन अनियमित हो जाती है।
- जानवर के मुंह से अत्यधिक लार बहने लगती है। उन्हें पेट में गंभीर दर्द, उल्टी और खूनी दस्त हो सकते हैं।
- गंभीर कमजोरी, मांसपेशियों में कंपन, शरीर का ठंडा पड़ना, कोमा और अंततः दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु। गाय-भैंसों में मात्र ५-१० ग्राम पत्तियां भी जानलेवा हो सकती हैं।

उपचार

तुरंत पशु चिकित्सक को बुलाएं। यदि जानवर ने तुरंत पत्तियां खाई हैं, तो पेट साफ करने का प्रयास किया जाता है।

- जहर के अवशोषण को रोकने के लिए एक्टिवेटेड चारकोल का घोल प्रचुर मात्रा में पिलाया जाता है।
- दिल की धड़कन को सामान्य करने के लिए एट्रोपिन सल्फेट के इंजेक्शन दिए जाते हैं। एंटी-अरिथमिक दवाएं भी दी जा सकती हैं।
- शरीर में पानी की कमी दूर करने के लिए नसों के माध्यम से ड्रिप लगाई जाती है।

२. धतूरा

धतूरा भारत के ग्रामीण और शहरी इलाकों में बंजर भूमि, खेतों के किनारों और कचरे के ढेरों के पास प्राकृतिक रूप से उगता है। इसके फल कांटेदार होते हैं और फूल लाउडस्पीकर के आकार के होते हैं।

जानवरों पर प्रभाव

- यह जहर जानवर के केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को पूरी तरह प्रभावित करता है।
- जानवर की आँखों की पुतलियाँ पूरी तरह लाल जाती हैं, जिससे उन्हें धुंधला दिखाई देता है। मुंह, गला और त्वचा पूरी तरह सूख जाती है।
- जानवर अत्यधिक बेचैन हो जाता है, बिना किसी वजह के इधर-उधर भागता है या मतिभ्रम का शिकार हो जाता है।
- सांस लेने में अत्यधिक कठिनाई, दिल की धड़कन का बहुत तेज होना, कब्ज, पेशाब रुकना, ऐंठन और सांस रुकने से मौत।

उपचार

- धतूरे के जहर के खिलाफ फाइसोस्टिग्माइन एक प्रभावी मारक दवा है, जिसे डॉक्टर की देखरेख में दिया जाता है।
- पेट से जहर बाहर निकालने के लिए दवाएं दी जाती हैं और पेट को शांत करने वाले तरल पदार्थ पिलाए जाते हैं।

- यदि जानवर बहुत अधिक उत्तेजित या हिंसक हो रहा है, तो उसे शांत करने के लिए सेडेटिव्स दिए जाते हैं।

३. अरंडी

भारत में अरंडी की खेती व्यावसायिक रूप से तेल के लिए की जाती है, और यह जंगली रूप में भी उगता है। इसके बीज चित्तीदार और दिखने में आकर्षक होते हैं। इसके बीजों में अत्यंत घातक टॉक्सिन होता है। यदि जानवर बीज को साबुत निगल ले, तो खतरा कम होता है, लेकिन चबाकर खाने पर यह तुरंत जान ले लेता है।

जानवरों पर प्रभाव

- रिसिन शरीर के भीतर प्रोटीन बनने की प्रक्रिया को रोक देता है, जिससे कोशिकाएं मरने लगती हैं।
- बीज खाने के कुछ घंटों बाद गंभीर लक्षण दिखाई देते हैं।
- जानवर को अत्यधिक पेट दर्द होता है। खूनी उल्टी और बहुत गहरे रंग के खूनी दस्त शुरू हो जाते हैं।
- तीव्र डिहाइड्रेशन (पानी की कमी), लीवर और किडनी का पूरी तरह फेल होना, आक्षेप और अंततः मृत्यु।

उपचार

- त्वरित उपचार ही एकमात्र रास्ता है।
- तुरंत पेट की सफाई की जाती है।
- एक्टिवेटेड चारकोल और मैग्नीशियम सल्फेट देकर बचे हुए जहर को गोबर के रास्ते बाहर निकाला जाता है।
- इलेक्ट्रोलाइट्स और आईवी फ्लूइड्स की भारी खुराक दी जाती है ताकि किडनी को फेल होने से बचाया जा सके।

४. गुंजा या रत्ती

यह एक बेल नुमा पौधा है जिसके बीज छोटे, चमकदार लाल और एक सिरे पर काले होते हैं। पुराने समय में इसका उपयोग सुनार वजन तोलने (रत्ती) के लिए करते थे। इसके बीजों में 'एब्रिन' नामक जहर होता है।

जानवरों पर प्रभाव

- यदि भेड़, बकरी या मवेशी इसके बीजों को चबा लेते हैं, तो कुछ ही समय में उनकी भूख पूरी तरह खत्म हो जाती है।
- जानवर लगातार सुस्त रहने लगता है, उसका तापमान गिर जाता है।

- पेट और आंतों में भयंकर सूजन और खून बहने लगता है, जिससे मल के रास्ते केवल खून बाहर आता है।
- शरीर के मुख्य अंग काम करना बंद कर देते हैं और जानवर ३-४ दिनों के भीतर दम तोड़ देता है।

उपचार

- अरंडी की तरह इसका भी कोई विशेष मारक नहीं है।
- शुरुआत में ही सलाइन परगोटिक्स देकर पेट साफ करना सबसे जरूरी है।
- जानवर को सदमे से बचाने के लिए कॉर्टिकोस्टेरोइड्स और जीवन रक्षक दवाएं दी जाती हैं।

५. लेंटाना कैमरा

लेंटाना (जिसे स्थानीय भाषा में राइमुनिया या घनघनी भी कहते हैं) एक विदेशी आक्रामक खरपतवार है, जो अब पूरे भारत के जंगलों और चरागाहों में फैल चुका है। इसके फूल छोटे और कई रंगों के गुच्छों में होते हैं। मुख्य रूप से गाय, भैंस और बकरियां इसका शिकार बनती हैं।

जानवरों पर प्रभाव

- यह जहर लीवर को गंभीर नुकसान पहुँचाता है और पित्त वाहिनी (Bile Duct) को ब्लॉक कर देता है।
- लीवर खराब होने से जानवर की आँखें, मसूड़े और त्वचा पूरी तरह पीली पड़ जाती है।
- पित्त रुकने के कारण शरीर में 'फाइलोएरिथ्रिन' नाम का तत्व जमा हो जाता है। जब जानवर धूप में जाता है, तो उसकी त्वचा सूर्य की रोशनी के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाती है।
- धूप के संपर्क में आने से जानवर के थूथन, कान और आँखों के पास की त्वचा जलने लगती है, पपड़ी बनकर उखड़ जाती है और वहां गहरे घाव हो जाते हैं। जानवर गंभीर कब्ज के बाद दस्त से पीड़ित होता है और भूख न लगने से मर जाता है।

उपचार

- प्रभावित जानवर को तुरंत पूरी तरह छायादार और अंधेरे स्थान पर शिफ्ट करें।
- लीवर की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए भारी मात्रा में लीवर सपोर्टिव दवाएं और बी-कॉम्प्लेक्स इंजेक्शन दिए जाते हैं।
- त्वचा के घावों पर एंटीसेप्टिक क्रीम और एंटीबायोटिक दवाएं लगाई जाती हैं ताकि सेकेंडरी इन्फेक्शन न हो।
- शुरुआत में एक्टिवेटेड चारकोल का बड़ा डोज (१-२ किलोग्राम गाय/भैंस के लिए) देना फायदेमंद होता है।

६. गाजर घास या चटक चांदनी

यह एक अत्यधिक तेजी से फैलने वाली खरपतवार है जो भारत के हर हिस्से में सड़कों और खेतों में उग आती है। इसके फूल सफेद और छोटे होते हैं।

जानवरों पर प्रभाव

- दुधारू पशुओं या घोड़ों के इस पौधे के संपर्क में आने से उनकी त्वचा पर गंभीर एलर्जी, खुजली और बाल झड़ने की समस्या हो जाती है।
- यदि गाय या भैंस इसे चर लेती हैं, तो उनके दूध का स्वाद अत्यधिक कड़वा हो जाता है और दूध की मात्रा घट जाती है। यह दूध इंसानों के लिए भी असुरक्षित होता है।
- लगातार खाने से मुंह में छाले, पेट की परतों में सूजन और लीवर-किडनी को नुकसान पहुँचता है।

उपचार

- चरागाहों से गाजर घास को उखाड़कर नष्ट करना ही प्राथमिक बचाव है।
- एलर्जी कम करने के लिए पशुओं को एंटीहिस्टामाइन और कॉर्टिकोस्टेरोइड इंजेक्शन दिए जाते हैं।
- मुंह के छालों के लिए पोटेशियम परमैंगनेट के हल्के घोल से सफाई की जाती है और बोरोग्लिसरीन लगाई जाती है।

बचाव के नियम

पशुओं में पौधों की विषाक्तता का इलाज मुश्किल होता है, इसलिए बचाव ही सबसे सर्वोत्तम उपाय है:

१. खेतों और चरागाहों के आसपास से लेंटाना, धतूरा और गाजर घास जैसी खरपतवारों को नियमित रूप से साफ करें।

२. कई बार हरा चारा काटते समय जहरीले पौधे अनजाने में कट जाते हैं। चारा खिलाने से पहले हमेशा उसकी जांच करें।

३. जानवर अक्सर जहरीले पौधे तभी खाते हैं जब चरागाह में सामान्य घास खत्म हो चुकी हो या वे भूखे हों। सूखे के दिनों में पशुओं के पोषण का विशेष ध्यान रखें।